मुख्य संरक्षक : श्री कर्मवीर शर्मा
(आयुक्त, उच्च शिक्षा विभाग भोपाल म.प्र.)

संरक्षक मंडल : डॉ.राजकुमार आचार्य
(कुलपति, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि.रीवा)
डॉ. पंकज कुमार श्रीवास्तव
(अति.संचालक, उच्च शिक्षा रीवा संभाग रीवा)

संरक्षक : डॉ. रमेश सिंह वाटे (प्राचार्य)
श्री अशोक कुमार राठौर (अध्यक्ष ज.भा.स.)
(शास.महाविद्यालय जैतहरी)

संयोजक : डॉ.जितेन्द्र सिंह धुर्वे (सहा.प्राध्यापक)

सह संयोजक : श्री राधेश्याम सोलंकी (सहा.प्राध्यापक)

सचिव : श्री राज कुमार सिंह (सहा.प्राध्यापक)

I.Q.A.C प्रभारी : श्री श्यामबली कुमार (ग्रंथपाल)

विश्व बैंक प्रभारी : श्री गजेन्द्र कुमार सिंह (सहा.प्राध्यापक)

–:: परामर्शदात्री समिति ::–

1. प्रो. परमानन्द तिवारी, पूर्व प्राचार्य, शास.महाविद्यालय बिरसिंहपुर पाली
2. डॉ.जे.के.संत, प्राचार्य, शासकीय तुलसी अग्रणी महाविद्यालय अनूपपुर
3. डॉ.वी.के.सोनवानी, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय कोतमा, अनूपपुर
5. डॉ.डी.पी.शार्मे, प्राचार्य, शासकीय महाविद्यालय पुष्पराजगढ़, अनूपपुर
6. डॉ.विवेक कुमार पटेल, विभागाध्यक्ष वाणिज्य, शा.एस.के.महा.मऊगंज रीवा
7. डॉ.रश्मि चौहान, सहा.प्राध्यापक, शास.महाविद्यालय कसरावद, खरगोन
8. डॉ.आई.के.बेग, सहा.प्राध्यापक, शास.नेहरू महाविद्यालय बुढ़ार, शहडोल

–:: आयोजन समिति ::–

1. कु.संगीता उईके, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
2. श्री देवेन्द्र धुर्वे, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
3. श्री पहलवान सिंह मीणा, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
4. डॉ.नीरज जायसवाल, सहा.प्राध्यापक, शा.महाविद्यालय जैतहरी
5. डॉ.खुशबू खान, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
6. श्री पुष्पराज सिंह बघेल, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
7. डॉ.शोभा तिवारी, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
8. श्रीमती रमा विश्वकर्मा, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
9. श्री बृजेश कुमार द्विवेदी, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
10. डॉ.अनीता पाण्डेय, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
11. डॉ.नीरज मिश्रा, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
12. डॉ.पुष्पेन्द्र सिंह बरगाही, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
13. डॉ.श्रद्धा मित्तल, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
14. कु.अरूणांजलि केसरी, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
15. श्री वीरेन्द्र कुमार पटेल, अतिथि विद्वान, शा.महाविद्यालय जैतहरी
16. श्री विशेषर सिंह, प्रयो.तकनीशियन, शा.महाविद्यालय जैतहरी
17. श्री अशोक राठौर, शासकीय महाविद्यालय जैतहरी

शासकीय महाविद्यालय जैतहरी

जिला–अनूपपुर (म.प्र.)

राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

दिनांक 20–21 मार्च 2023

पंजीयन प्रपत्र

नाम : .....

पदनाम : .....

संस्था : .....

.....

पता : .....

.....

ई–मेल .....

मोबाइल नं.: .....

शोध–पत्र का शीर्षक : .....

.....

मैं प्रमाणित करता/करती हूं कि मेरा शोध पत्र मौलिक और अप्रकाशित है।

हस्ताक्षर .....

नाम .....

ट्रांजेक्शन आईडी .....

.....

दिनांक .....

राशि .....

"शोध पद्धति"

Research Methodology

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दो दिवसीय राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी

दिनांक 20–21 मार्च 2023

॥ प्रायोजक ॥

विश्व बैंक परियोजना के अंतर्गत
मध्यप्रदेश उच्च शिक्षा गुणवत्ता परियोजना
(MPHEQIP) में प्रायोजित

॥ आयोजक ॥

शासकीय महाविद्यालय जैतहरी

॥ संरक्षक॥

डॉ. रमेश सिंह वाटे

–: आयोजन स्थल :–

शासकीय महाविद्यालय जैतहरी
जिला–अनूपपुर (म.प्र.)

शोध पद्धति : Research Methodology

संगोष्ठी का उद्देश्य

विदित है कि हमारा यह संसार प्राकृतिक एवं चमत्कारिक अवदानों से परिपूर्ण है। अनन्त काल से यहाँ तथ्यो का रहस्योद्घाटन और व्यवस्थित अभिज्ञान का अनुशीलन होता रहा है। कई तथ्यों का उद्घाटन तो दीर्घ अन्तराल के निरन्तर शोध से ही सम्भव हो सका है। जाहिर है कि इन तथ्यों की खोज और उसकी पुष्टि के लिए शोध की अनिवार्यता बनी रही है।

मानव की जिज्ञासु प्रवृत्ति ने ही शोध–प्रक्रिया को जन्म दिया। शोध–कार्य सदा से एक प्रश्नाकुल मानस की सुचिन्तित खोज–वृत्ति का उद्यम बना रहा है। जाहिर है कि किसी सत्य को निकटता से जानने के लिये शोध एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया होती आई है। समय –समय पर विभिन्न विषयों की खोज और बदलते क्रम मे मानव जीवन की समस्याएँ विकट होती आई है, उत्तरोत्तर नई समस्याओ से मानव जाति का सामना होता आया है। शोध की महता मानव समुदाय की सोच की संगत विविधता से सम्बद्ध रहती आई है मानव समुदाय की रूचि, प्रकृति, व्यवहार, स्वभाव और योग्यता के आधार पर यह भिन्नता परिलक्षित होती रहती है। मानवीय व्यवहारो की अनिश्चित प्रकृति के कारण जब हम व्यवस्थित ढंग से किसी विषय–प्रसंग का अध्ययन कर किसी निष्कर्ष पर आना चाहते है। तो शोध अनिवार्य हो जाता है। यूँ कहे कि सत्य की खोज या प्राप्त ज्ञान की परीक्षा हेतु व्यवस्थित प्रयत्न करना शोध कहलाता है। अर्थात् शोध का आधार विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति है जिसमे ज्ञान की वस्तुपरक होता है। तथ्यों के अवलोकन से कार्य–कारण सम्बन्ध सम्बन्ध ज्ञात करना शोध की प्रमुख प्रक्रिया है इस अर्थ मे हम स्पष्ट देख पा रहे है कि शोध का सम्बन्ध आस्था से कम परीक्षण से अधिक है। शोध–वृत्ति का उद्यम–स्त्रोत प्रश्नो से घिरे शोधकर्मी की संशयात्मा होती है। प्रचारित मान्यता की वस्तपरकता पर शोधकर्मी का संशय उसे प्रश्नाकुल कर देता है, फलस्वरूप वह उसकी तथ्यपूर्ण जॉच के लिये उद्यमशील होता है। स्थापित सत्य है कि हर संशय का मूल दर्शन है, और सामजिक परिदृश्य का हर नागरिक दर्शन शास्त्र पढे बिना भी थोडा–थोडा दार्शनिक होता है।

व्यापक अर्थ मे शोध या अनुसंधान किसी भी क्षेत्र मे ज्ञान की खोज करना या विधिवत गवेषणा करना होता है। वैज्ञानिक अनुसंधान मे वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुये जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है। नवीन वस्तुओं की खोज और पुरानी वस्तुओं एवं सिद्धांतों का पुन : परीक्षण करना, जिससे कि नए तथ्य प्राप्त हो सके, उसे शोध कहते है। शोध के अन्तर्गत बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन–विश्लेषण करने नए तथ्यों या सिद्धतों का उद्घाटन किया जाता है। शोध का परिचय देतु हुये डॉ.नागेन्द्र लिखते है कि अनुसंधान का अर्थ है परिपृच्छा, परीक्षण, समीक्षण आदि । संधान का अर्थ है दिशा विशेष में प्रवृत्त करना या होना और अनु का अर्थ है पीछे, इस प्रकार अनुसंधान का अर्थ हुआ– किसी लक्ष्य को सामने रखकर दिशा विशेष मे बढना –पश्चाद्गमन अर्थात किसी तथ्य की प्राप्ति के लिये परिपृच्छा, परीक्षण आदि करना।

।। संगोष्ठी के उपविषय ।।

1. गुणात्मक एवं परिणात्मक शोध प्रविधि।
2. शोध प्रविधि के चरण।
3. शोध पद्धति में कृत्रिम बुद्धिमत्ता।
4. शोध पद्धति शास्त्र का विकास।
5. शोध पद्धति एवं सांख्यिकीय उपकरण।
6. भारत की विशिष्ट शोध पद्धति।

:: शोध पत्र भेजने का पता ::

शोध आलेख आंमत्रण पत्रकारिता के विविध संदर्भानुसार आयोजित राष्ट्रीय शोध संगोष्ठी में भाग लेने के इच्छुक आंमत्रित विद्वानो/प्राध्यापकों/अतिथि विद्वानों/शोधार्थियों/विद्यार्थियों एवं जनसंचार माध्यम के प्रतिनिधियों से आग्रह है कि अपने शोध आलेख एवं सारांश जो 400 शब्दों में हो जिसको दिनांक 19 मार्च 2023 तक

ई–मेल– hegcjaianu@mp.gov.in,
visheshwarg@gmail.com, jittudhurve1jd@gmail.com,
rathourashok90@gmail.com

के माध्यम से प्रेषित करें। विलंब से प्राप्त आलेखों को प्रकाशित करने में कठिनाई होगी। आलेखों की पाण्डुलिपि आप अपने साथ अथवा पोस्ट के माध्यम से भी प्रेषित कर सकते है। आलेख देवनागरी एवं रोमन विधि में हिन्दी/अंग्रेजी भाषा में स्वीकार्य होंगे। आलेखों को प्राप्त स्मारिका में प्रकाशित करने का प्रावधान है।

पंजीयन शुल्क

प्राध्यापक/सहा.प्राध्यापकों/अतिथि विद्वानों के लिये – 500/- रूपये
शोधार्थियों तथा छात्रों के लिये – 300/- रूपये

सचिव जनभागीदारी समिति सेन्ट्रल बैक ऑफ इन्डिया जैतहरी
खाता नं0–3365221876
आई.एफ.सी.कोड CBIN0281188 अथवा
शोध संगोष्ठी के प्रारंम्भ मे नकद जमा कराया जा सकेगा,
आवास सुविधा उपलब्ध है।

शोध संगोष्ठी में प्रतिभागियों को यात्रा व्यय उनकी निजी संस्थाओं/संसाधनों से देय होगा। स्त्रोत व्यक्तियों को ही यात्रा व्यय दिया जायेगा।

महाविद्यालय का परिचय

परिचय–शासकीय महाविद्यालय जैतहरी जिला–अनूपपुर में पुराने शहडोल जिले का भाग है यह अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा से सम्बद्ध है। इसकी स्थापना मध्यप्रदेश शासन उच्च शिक्षा विभाग द्वारा 02 जुलाई 2012 में की गई नवीन महाविद्यालय निरंतर विकास की दिशा में प्रयत्नशील है। जैतहरी रेल अथवा सड़क मार्ग से पहुंचा जा सकता है हवाई मार्ग के लिये रायपुर–जबलपुर हवाई अड्डे क्रमश: 340–280 किमी. दूरी पर है। यहां मात्र पैसेन्जर गाड़ियां जो भोपाल इंदौर विलासपुर शहरो को जोड़ती है सभी फॉस्ट एक्सप्रेस गाड़ियां समीपी स्टेशन अनूपपुर 15 किमी. पेन्ड्रारोड 35 किमी दूरी पर रुकती है जहां से जैतहरी पहुंचा जा सकता है जैतहरी द.पू.म. रेल्वे कटनी बिलासपुर जंक्शन के मध्य अनूपपुर जंक्शन के पास है। यहां से पुण्य सलिला नर्मदा की उद्गम स्थली अमरकंटक जैव विविधता से परिपूर्ण है दूरी 70 किमी. राष्ट्रीय उद्यान बांधवगढ़ 135 किमी दूरी पर स्थित है।

।। कार्यक्रम ।।

दिनांक 20.03.2023

पंजीयन एवं स्वल्पाहार	प्रात: 09.00–11.00
प्रथम सत्र (उदघाटन)	प्रात: 11.00–12.30
भोजन	दोप. 12.30–01.30
द्वितीय सत्र (तकनीकी)	दोप. 02.00–03.50
शोध छात्रों हेतु विशेष तकनीकी सत्र	दोप. 03.30–05.30

दिनांक 21.03.2023

तृतीय सत्र (तकनीकी)	प्रात: 11.00–12.30
भोजन	प्रात: 12.30–01.30
चतुर्थ सत्र (तकनीकी)	दोप. 02.00–03.30
समापन	दोप. 04.00–05.00